हिन्दी विभाग

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय

उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) सरदारशहर, चूरू
राजस्थान

विस्तार व्याख्यान

समकालीन महिला लेखन

दिनांक : 28.03.2022

प्रतिवेदन

हिन्दी-विभाग

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय

उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) सरदारशहर, चूरू (राजस्थान)

IASE (deemed to be university)

विस्तार व्याख्यान

दिनांक : 28.03.2022, सोमवार, समय : अपराह्न 12.30

विषय : समकालीन महिला लेखन

मुख्य संरक्षक : श्री कनकमल दूगड़
कुलाधिपति, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान
(मानित विश्वविद्यालय)

संरक्षक : प्रो. देवेन्द्र मोहन
प्रति कुलाधिपति, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान
(मानित विश्वविद्यालय)

संरक्षक : प्रो . बी. एल. शर्मा
कुलपति, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान
(मानित विश्वविद्यालय)

सह संरक्षक : श्री जीतेन्द्र पारीक
रजिस्ट्रार, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान
(मानित विश्वविद्यालय)

मुख्य वक्ता
डॉ. नीतू परिहार
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय
उदयपुर

स्थान : सभागार, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय

डॉ. अविनाश पारीक
अधिष्ठाता,
मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय

निवेदक
डॉ. कल्पना मौर्य,
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
डॉ. विदुषी आमेटा,
सह आचार्य, हिन्दी विभाग

हिन्दी विभाग, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान
उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) सरदारशहर, चूरू, राजस्थान

विस्तार व्याख्यान
विषय : समकालीन महिला लेखन

दिनांक : 28.03.2022

कार्यक्रम रूपरेखा :

क्रम सं.	कार्यक्रम विवरण	वक्ता	समय
1	दीप प्रज्ज्वलन	मंचासीन महानुभाव	12..30–12.35
2	सरस्वती वंदना	शिल्पा शर्मा, आईना जोशी व उर्मिला सुथार	12..35–12.45
3	प्रार्थना (गांधी विद्या मंदिर)	भैंरूसिंह राजपुरोहित, राजेश कुमार नायक, बलवान	12.45–12.50
4	स्वागत वक्तव्य व विषय प्रवेश	डॉ. कल्पना मौर्य	12.50–01.20
5	संस्था परिचय	डॉ. अविनाश पारीक	01.20–01.30
6	वक्तव्य	डॉ. नीतू परिहार	01.30–02.30
7	आभार ज्ञापन एवं संयोजन	डॉ. विदुषी आमेटा	02.30–02.40

विवरण

दिनांक 28.03.2022 सोमवार, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) सरदारशहर, चूरू के मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय के हिन्दी विभाग द्वारा 'समकालीन महिला लेखन' विषय पर विस्तार व्याख्यान आयोजित किया गया। साहित्य में स्त्री की उपस्थिति और साहित्य लेखन के क्षेत्र में स्त्री रचनाकारों की स्थिति को समझने के उद्देश्य से उक्त आयोजन की रूपरेखा बनाई गई।

कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती वंदना से किया गया। तृतीय वर्ष की विद्यार्थी शिल्पा शर्मा, आईना जोशी व उर्मिला सुथार ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। तत्पश्चात विद्यार्थी भैंरूसिंह राजपुरोहित, राजेश कुमार नायक, बलवान ने पितृ संस्था गांधी विद्या मंदिर की प्रार्थना प्रस्तुत की। विभाग की अध्यक्षा डॉ. कल्पना मौर्य ने स्वागत वक्तव्य देते हुए विषय परिचय दिया।

उन्होंने कहा कि आदि –अनादि काल से इस दुनिया में कई ग्रंथ लिखे गए हैं। उनमें वेद, पुराण के साथ रामायण, महाभारत आदि श्रेष्ठ तथा पवित्र ग्रंथा हैं। परंतु इन सभी ग्रंथों में स्त्री का पात्र अति महत्वपूर्ण है। स्त्री को एक ओर देवी कहते हैं तो दूसरी ओर दासी। कभी – कभी भोग की वस्तु के रूप में दर्शाते हैं। किंतु यह स्त्री क्या है इस बात को आज तक कोई नहीं समझा, क्योंकि स्त्री अतुलनीय है। स्त्री के बाह्य रूप को सभी लोगों ने देखा परंतु उसके अंर्तमन को कोई नहीं पढ़ सका। हम कहते रहे कि – यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः। जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता बसते हैं। वैदिक साहित्य में नारी के उदात्त एवं विशेष व्यक्तित्व की अभिव्यंजना हुई है। समाज ने कर्तव्य और अधिकारों का बटवारा पुरुष और नारी में स्वभावतः रुचि और शक्ति के अनुकूल कर लिया था। इसलिए नारी के प्रति मनु का कथन है कि – पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने। रक्षंति स्थावरे पुनः न स्त्री स्वातंत्रम मर्हति।। अर्थात नारी जब कुँवारी रहती है, तब पिता के आश्रम में युवावस्था में पति के आश्रम में, बुढ़ापे में पुत्र के आश्रम में रहने के कारण नारी की स्वातंत्र नहीं है। परिवर्तित इस समाज में स्त्री अपनी बुद्धि– शक्ति को प्रदर्शित करते हुए सभी क्षेत्रों में पदार्पण कर चुकी है। किंतु पुरानी परंपरा तथा दकियानूसी पद्धतियों से पूरी तरह बाहर नहीं निकली है। क्योंकि पुरुष जैसा भी हो आज भी वह पति को परमेश्वर ही मानती है। किंतु पुरुष स्त्री को केवल जाना है, पर समझा नहीं। इस समाज में पुरुष से शोषित, पीड़ित, अपमानित नारी अपने अस्तित्व की तलाश कर रही है। क्योंकि भारतीय स्त्री का हृदय ममता, सेवा, दया, त्याग, क्षमा आदि गुणों से भरा हुआ है। इस के बदले में उसको अपमान तथा शोषण को सहना पड़ता है। पुरुष प्रधान समाज में आज नारी रुढ़ियाँ को तोड़कर मुक्त रूप से जीने की जिजीविषा रखती है। भारतीय समाज व्यवस्था में दमित स्त्री समाज में उभरकर आना चाहती हैं। इसलिए पुरुष की पराधीनता तथा दासता को ठुकरा दिया। और अपने विचारों को मन की दृढ़ता के साथ अभिव्यक्त करने का साहस करने लगी। आज की नारी अन्याय सहनेवाली नहीं है। वह अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो गई है। आधुनिक स्त्री शिक्षित होने के कारण वह अपना निर्णय लेने के लिए सक्षम है। संकाय अधिष्ठाता डॉ. अविनाश पारीक ने संस्थान का परिचय दिया।

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के हिन्दी विभाग की अध्यक्ष डॉ. नीतू परिहार ने अपने वक्तव्य में समकालीन परिदृश्य के महिला लेखन पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि मन्नू भण्डारी, चित्रा मुद्गल, उषा प्रियंवदा, ममता कालिया, चन्द्रकिरण सौनरेक्सा, कृष्णा सोबती, मंजुल भगत, नासिरा शर्मा, प्रभा खेतान, अलका सरावगी, मनीषा कुलश्रेष्ठ, अनामिका, निर्मला पुतुल जैसी रचनाकार निरन्तर स्त्री लेखन को समृद्ध कर रही है।

स्त्री लेखन पुरूष वर्चस्व के सामने अपने अधिकारों के लिए कटिबद्ध लेखन है। वह अपने आप के लिए उन समस्त अधिकारों की मांग करती है, जिसके बिना अस्मिता अंधेरे में है। वह

पुरूषवादी समाज में पुरूषों से प्रतिस्पर्धा करके आगे नहीं जाना चाहती बल्कि मात्र बराबरी का हक चाहती है। स्त्री लेखन में व्यापकता है, वह अपने समाज के प्रति सचेत, विसंगतियों से असहमत एवं उन्हें बदलने के लिए कृतसंकल्प है। इस कड़ी में सुभद्रा कुमारी चौहान व महादेवी वर्मा को उदाहरण स्वरूप देख सकते है। इनकी ही रचनाओं से स्त्री को सम्पूर्ण रूप में अभिव्यक्ति प्राप्त हुई।आज के स्त्री विमर्श की सबसे बड़ी उपलब्धि स्त्री विमर्श ने स्त्री का पदार्थीकरण रोका, स्त्री विमर्श ने नारी को वस्तु से व्यक्ति बनने का समझ पैदा की। वास्तव में स्त्री का प्रतिरोध या चेतना की जागृति एक ही घटना नहीं है। इसमें सदियों से चली आ रही संघर्ष की गाथा प्रस्तुत है। इसमें सांस्कृतिक नवोत्थान, शैक्षिक संस्थाएं एवं नारीवादी आंदोलनों का प्रमुख हिस्सा है।

समकालीन लेखिकाओं ने आज के जीवन की परिवर्तनशीलता और नारी–जीवन के परिवर्तित मूल्यों को अत्यंत मार्मिकता के साथ अपने उपन्यासों में चित्रित किया है नीत नई होती टेक्नोलोजी, भूमंडलीकरण और बाजारवाद के इस दौर में, जबकि स्त्री की दबी–ढुबकी दुनिया में एक जबर्दस्त परिवर्तन आया है, बेशक वह कितना ही सतही क्यों न हो, कहानी के भीतर भी यह बदलाव भिन्न–भिन्न रूपों में प्रतिध्वनित हो रहा है। आज एक बड़ी संख्या में स्त्री कथाकार सामने आ रही हैं और तमाम नारी आंदोलनों और स्त्री विमर्शों को बरबस खुलकर लिख रही है। उन्होंने यह मिथ्या भी तोडी है कि स्त्री सिर्फ घर–परिवार की ही बात कर सकती है। कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी, ममता कालिया, मृदुला गर्ग, नासिरा शर्मा, उषा प्रियंवदा से लेकर चित्रा मुद्गल, अल्का सरावगी, चन्द्रकान्ता, मैत्रेयी पुष्पा, राजी सेठ, अर्चना वर्मा, मधु कांकरिया, अल्पना मिश्र, मनीषा कुलश्रेष्ठ, जया जादवानी, उर्मिला शिरीष, गीतांजली श्री, सुषमा मुनीन्द्र, रोहिणी अग्रवाल, रजनी गुप्त, कविता, सुधा अरोड़ा, इंदिरा दागी आदि की एक लंबी फेहरिस्त है जिन्होंने हिन्दी कथा साहित्य को अपनी लेखन से सींचा है। समकालीन लेखिकाओं ने आज के जीवन की परिवर्तनशीलता और नारी जीवन के परिवर्तित मूल्यों को अत्यंत मार्मिकता के साथ अपनी रचनाओं में चित्रित किया है। भूमंडलीकृत समाज में अपने अस्तित्व को बनाए रखने की जो छटपटाहट स्त्री रचनाकारों में दर्ज हुई है वह समकालीन दौर में स्त्री–लेखन को विशिष्ट स्थान प्रदान करती हैं। आलोचकों के अनुसार, "वह अपने वजूद को महसूस करती है। एक सजग इकाई के रूप में वह तमाम यथार्थ स्थितियों से प्रतिकृत होती वर्तमान सामाजिक परिवेश के अंतर्विरोधों व असंगतियों को अपनी व्यक्तिमत्ता, स्त्री अस्मिता और मानवीय स्थिति के परिप्रेक्ष्य में जानना समझना चाहती है। उनका विश्लेषण विवेचन करने का प्रयास करती है।"आज के कथा साहित्य में स्त्री स्वर का सच बेरोकटोक सबके सामने उजागर हो रहा है। कहीं सुधा अरोड़ा जैसी लेखिकाओं की संयमित कलम से जो उधड़े हुए सच को बेशक उधड़ा ही रहने देगी, लेकिन इस बात का भी ध्यान रखेगी कि वह और अधिक बेपर्दा न हो तो दूसरी ओर जयश्री राय और गीताश्री बिंदास और बेबाक लेखिकाएँ हैं जो उधड़े हुए स्वेटर को खींचकर पूरा उधेड़ देने में भी कोणी नहीं बरतेंगी लेकिन

उद्देश्य सबका वही है, सब वही कर रही हैं अपने अपने अंदाज में कथा के माध्यम से सच को सामने लाना।

स्त्री के आधे अधूरे रिश्तों के पीछे छिपी हकीकत को निर्ममता से उजागर करती किरण अग्रवाल की कहानी "जो इन पन्नों में नहीं है" की नायिका का कथन दृ "हर नाम मुझे अपना ही लगता है। हर स्त्री का चेहरा अपने जैसा लगता है। जब कभी किसी स्त्री को अकेली भीड़ में देखती हूँ तब लगता है कि वह तो मैं हूँ। तब बड़े पेशोपोस में पड़ जाती हूँ कि अगर वह मैं हूँ तो मैं कौन हूँ?" मन को उत्कंठा से भर देता है। नीला प्रसाद की कहानी "चालीस साल की कुंवारी लड़की" की नायिका की शादी इसलिए नहीं हो पाती क्योंकि वह तो एक ईसाई के साथ शादी करना चाहती है और दूसरे तमाम गुणों के बावजूद वह साँवली भी है। प्रकृति करगेती की कहानी "ठहरे हुए से लोग" की नायिका, बाजार में काँच की दीवार के पीछे सजी–धजी खड़ी एक बुत, खुश है कि वह एक बुत है क्योंकि "शीशे की दीवारों के अंदर कोई 'गलत काम' भी नहीं हो सकता था उसके साथ।"

पर्वतारोहण की पृष्ठ भूमि पर लिखी गई किरण सिंह की कहानी "द्रोपदी पीक" में भी वहाँ इस ऊंचाई पर भी बर्फ के नीचे दबा वही निर्मम सच उभर कर आ रहा है दृ "दुनिया में औरत का भाग्य और सब्जी मंडी में सब्जियों का भाव एक बराबर होता है। काहे की सब सब्जीवाले मिलकर यह तय कर लेते हैं। कोई दाम बिगाड़नेवाला हो तो उसे जात बाहर किया जाता है।"

उपरोक्त सभी लेखिकाओं का जीवनानुभव अलग–अलग है। न केवल कहानियों के विषय और प्रस्तुतीकरण बल्कि स्वरों के घात प्रतिघात भी एक दूसरे से बिलकुल भिन्न है। फिर भी सच एक ही है जो दिखाई दे रहा है दृ हर स्त्री स्वर से।कहानियों में स्त्री स्वर का सच अपने होने के पक्ष में चाहे कितना भी बुलंद हो दृ समाज में उसका प्रभाव उस अनुपात में पड़ता नहीं दिखता है दृ परंतु जितना दिख रहा है वह निराशाजनक नहीं है। कहानियाँ मात्र कोरी काल्पनिक नहीं होती। कथाकार की संवेदना अपने परिवेश में घट रही विसंगतियों के तरंग को अनायास ही ग्रहण कर लेती है। और उन अनुभूतियों को वह शब्दों के द्वारा अभिव्यक्त कर देता है। हिन्दी विभाग की सहआचार्य डॉ. विदुषी आमेटा ने संचालन करते हुए आभार ज्ञापन किया। व्याख्यान में 80 विद्यार्थियों ने उपस्थित रहे।

कों को मिलेगा लाभ

र सांवताराम दहिया, पवन कुमार
न जोशी, पवन भोजक, महेन्द्र सैनी
आदि ने ग्राम पंचायतों से जुड़े कार्यों
के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

साहित्य व समाज में स्त्री अस्मिता को रेखाकिंत करने की आवश्यकता

सरदारशहर. उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मानित विश्वविद्यालय, गांधी विद्या मंदिर के हिन्दी विभाग की ओर से समकालीन महिला लेखन विषय पर व्याख्यान का आयोजन हुआ। मुख्य वक्ता मोहनलाल सुखाडिया-विश्वविद्यालय उदयपुर के हिन्दी विभाग की अध्यक्ष डा.नीतू परिहार ने कहा कि साहित्य व समाज में स्त्री अस्मिता को रेखाकिंत किए जाने की आवश्यकता है। उन्होंने मन्नू भण्डारी, अनामिका, शैलजा, निर्मला पुतुल जैसी ख्यातनाम महिला रचनाकारों की रचनाओं का उदाहरण देते समकालीन साहित्य में स्त्री लेखन की प्रवृत्तियों और प्रभाव का परिचय दिया।

इससे पूर्व विभागाध्यक्ष डा.कल्पना मौर्य ने विषय का परिचय दिया। इस अवसर पर मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता डा.अविनाश पारीक के साथ संकाय के व्याख्याता डा.निधि सोनी, डा.धर्मराज पँवार, हिमांशु ग्रोवर, डा.शैयरी चौधरी उपस्थित थे। संचालन हिन्दी विभाग की सह आचार्य डा.विदुषी आमेटा ने किया।

कम्प्यूटर प्रशिक्षण शिविर शुरू

सरदारशहर. प्रताप कॉलोनी में स्थित नवीन स्किल डेवलपमेंट सेंटर

POCO
SHOT ON POCO M2 PRO